स्थापना
अधिवेशन 6

हमारे जन्मदिन का उपहार

हमारे जन्म दिन का उपहार

हम ऐसे स्थान पर पहुच गए हैं जहां हमें बढ़ोतरी की बात करने की जरूरत है। यदि हम सभी के जीवन में जन्म के बाद बढ़ोतरी न हो तो यह एक दुर्घटना हैं (पौधों, पशुओं, मानवीय जीवनों में)... 1कुरि. 10:1—4

बढोतरी का भेद इस्राएल के मिश्र से बाहर आने के दृष्टान्त के विवरण मे दिया गया है। 1 कुरि 10:1—4 परमेश्वर उस सबका प्रबन्ध करता है जिसकी हमें जरूरत है परन्तु हमें इसे ग्रहण करना है अन्यथा हम मर सकते है।

परमेश्वर के प्रबन्ध में कई विचार शामिल हैं :

1. **पोषण** — इस्राएल की बढ़ोतरी नहीं हो सकती थी। जो कुछ उनके पास पोषण के लिए था उसके लिए उन्हें परमेश्वर की ओर देखना था। हम अपने पालन पोषण के लिए कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकते। परन्तु परमेश्वर प्रबन्ध करता है।

परमेश्वर का प्रबन्ध हमारे लिए इन पोषणों में पाया जाता हैः

- परमेश्वर का वचन

— परमेश्वर के वचन के हिस्से को प्रतिदिन पढ़ें और अध्ययन करें (हम इसके द्वारा भोजन करना अगले भाग में सीखेंगे)

— परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित और अधिक जानकारियां शिक्षण, प्रचार, पढ़ने आदि से ग्रहण करें।

— हमारा प्रार्थना का जीवन — बढ़ौतरी के लिए सही वातावरण का प्रबन्ध करता है — (हमारे लिए भोजन और पानी का)

उदाहरण : यीशु के जीवन का उदाहरण

और दुसरी चीजों के साथ हमारे प्रार्थना के जीवन में यह चीजें शामिल होनी चाहिए :

1. धन्यवाद देना 1थिस्स 5:18 फिल. 4:4
2. निवेदन फिल. 4:6 (प्रत्येक विवरण में रूची रखता है)
3. मध्यस्थता 1तीम. 2:1 (न केवल अपने लिए पर दूसरों के लिए — परिवार, मसीह में भाईयों और बहनें, सरकारी अगुवों)
4. प्रार्थना में लगें रहना लूका 18:1
5. ''आत्मा में'' — प्रार्थना की उस भाषा में जिसे पवित्रआत्मा देता है

- मसीही संगति — भाईयों और बहनों की ओर से उत्साह। साथ बढ़िए, उत्साहित करें, मदद दें

जैसा उसने इस्राएल के साथ किया, वैसे ही परमेश्वर ने हमारे लिए पोषण का प्रबन्ध किया है। परन्तु हमें इसके ''**लिए जाना होगा**''।

उदाहरण : परमेश्वर उस पक्षी के समान है जो अपने बच्चों को भोजन दे रहा होता है।

— परमेश्वर ने हमे अपना वचन दिया है अपनी कलिसीया हमारी देखभाल और बढ़ोतरी के लिए दी है। पवित्रआत्मा हमारी अगुवाई के लिए दिया हैं। उसने हमारे लिए रास्ता बनाया है परन्तु हमें उस पर चलना है।

— बढ़ोतरी की चाबी अनुशासन है :— चर्च नियमित रूप से जांए, बाइबल नियमित पढ़े, प्रार्थना में उसके साथ समय बितांए।

हमारें जन्मदिन का उपहार

जन्म बढ़ोतरी को आरम्भ करता है

' 'हे भाईयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बाप दादे बादल के नीचे थे, और वे सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; और सबने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; और सबने एक ही आत्मिक भोजन किया; और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ–2 चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।'' – 1कुरिथियों 10:1–4

सन्त पौलूस इस्राएलियों के मिश्र से बाहर निकलने के रूपक का प्रयोग करता है। वह वर्णन करता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बन्धन और उस जीवन से उनको लाल समुद्र के बपतिस्में के द्वारा छुटकारा दिलाया। अब वे नए तरीके से जीवन जीने के लिए समर्पित हैं।

उनकी यात्रा में परमेश्वर ने उनके मार्ग के हर कदम पर उनको प्रबन्ध करके दिया; पर उन्हें इस प्रबन्ध के लिए उसकी ओर देखना था। हमारी बढ़ोतरी का भेद इसी दिशा में निर्भर करता है कि परमेश्वर देता है और हम उसके प्रबन्धों को प्राप्त करते हैं। इस्राएली लोगों की तरह, हम बियाबान में मर सकते हैं, यदि हमें भोजन न दिया गया, देखभाल न की गई हो, निर्देश न दिया गया हो और परमेश्वर द्वारा न बचाया गया हो।

परमेश्वर के प्रबन्ध निम्न बातों को शामिल करते है :

1. **पोषण**

– परमेश्वर ने मन्ना दिया, बटेर दिये ओर चट्टान से पानी दिया। इस भोजन वस्तु के बिना वे जीवित नहीं रह रकते थे। हमारी भोजन सामग्री परमेश्वर से आती है :

परमेश्वर का वचन

''मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातों को देख सकूं मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं , अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख''
– भजन 119:18–19

प्रार्थना

मसीही संगती

– परमेश्वर ने दिया परन्तु इस्राएलियों को **इसके लिए जाना होगा**

2. **अगुवाई**

– दृष्टिगत निर्देशन उदाहरण : खम्बा और बादल

''तेरा वचन तेरे पांव के लिए दीपक और पथ के लिए उजियाला है''– भजन 119:105

2. <u>अगुवाई</u> – यदि इस्राएल अपने रास्ते पर चला गया होता तो वह जीवित नहीं रह पाता वह उस रास्ते पर चला जहां परमेश्वर उसकी अगुवाई कर रहा था।

- परमेश्वर की दिखाई देने वाली उपस्थिति (बादल और आग का खम्बा) – उन्हें बस इसके पीछे चलना था।

(भजन संहिता 119:18–20 ''मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदभुत बातें देख सकूं। मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं; अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख। मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है – बाइबल के पुराने अनुवाद से)

(भजन संहिता 119:18–20 ''मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदभुत बातें देख सकूं। मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं; मुझे एक नक्शे की जरूरत है– और आपकी आज्ञा मेरे लिए निर्देशन और निर्देशक आरेख है। मैं आपके निर्देशों की बोलने से अधिक अभिलाषा रखता हूं – लीविंग बाइबल के अनुवाद से)

हमारें जन्मदिन का उपहार

जन्म बढ़ोतरी को आरम्भ करता है

' 'हे भाईयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बाप दादे बादल के नीचे थे, और वे सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; और सबने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; और सबने एक ही आत्मिक भोजन किया; और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ–2 चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।'' – 1कुरिथियों 10:1–4

सन्त पौलूस इस्राएलियों के मिश्र से बाहर निकलने के रूपक का प्रयोग करता है। वह वर्णन करता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बन्धन और उस जीवन से उनको लाल समुद्र के बपतिस्में के द्वारा छुटकारा दिलाया। अब वे नए तरीके से जीवन जीने के लिए समर्पित हैं।

उनकी यात्रा में परमेश्वर ने उनके मार्ग के हर कदम पर उनको प्रबन्ध करके दिया; पर उन्हें इस प्रबन्ध के लिए उसकी ओर देखना था। हमारी बढ़ोतरी का भेद इसी दिशा में निर्भर करता है कि परमेश्वर देता है और हम उसके प्रबन्धों को प्राप्त करते हैं। इस्राएली लोगों की तरह, हम बियाबान में मर सकते हैं, यदि हमें भोजन न दिया गया, देखभाल न की गई हो, निर्देश न दिया गया हो और परमेश्वर द्वारा न बचाया गया हो।

परमेश्वर के प्रबन्ध निम्न बातों को शामिल करते है :

1. **पोषण**

– परमेश्वर ने मन्ना दिया, बटेर दिये ओर चट्टान से पानी दिया। इस भोजन वस्तु के बिना वे जीवित नहीं रह रकते थे। हमारी भोजन सामग्री परमेश्वर से आती है :

परमेश्वर का वचन

''मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातों को देख सकूं, मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं, अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख''

– भजन 119:18–19

प्रार्थना

मसीही संगती

– परमेश्वर ने दिया परन्तु इस्राएलियों को **इसके लिए जाना होगा**

2. **अगुवाई**

– दृष्टिगत निर्देशन उदाहरण : खम्बा और बादल

''तेरा वचन तेरे पांव के लिए दीपक और पथ के लिए उजियाला है''– भजन 119:105

परमेश्वर ने उन्हें अगुवे दिए जिन्हें उसने अपनी अगुवाई और निर्देशन दिया — यदि उन्होंने इसकी पालना की तब परमेश्वर की आशिष उन पर उतरी और परमेश्वर के उद्धेश्य पूरे हुए।

परमेश्वर ने चर्च को आत्मिक अगुवे, आत्मिक चरवाहे दिए हैं ताकि वे निर्देशन और अगुवाई में मदद दे सकें (इब्रानियों 13:17) मानवीय अगुवे पाप में गिरने वाले प्राणी ही हैं परन्तु परमेश्वर उन्हे इस्तेमाल करेगा जैसा हम उनकी ओर देखते हैं।

यदि हम परमेश्वर की इस तरह की अगुवाई के विद्रोह में हैं और अपने ही रास्तों पर चलना चाहते हैं (भले ही हम सोचते हों कि इसमें परमेश्वर है), तब हमारी बढ़ोतरी रूक जाती है और इस्राएल के लोगों की तरह हम उन क्षेत्रों के चक्कर काटते रहते हैं जो परमेश्वर ने अपनी योजना में नहीं रखें हैं।

<u>सीधी आवाज़</u> —

— हमें सुनने सीखना चाहिए और उसकी आवाज़ को जानना चाहिए।

— परन्तु बाकी की सभी व्यक्तिगत अगुवाईयां जो हम सोचते हैं कि हमें प्राप्त हुई हैं उनकी दूसरे रास्तों से भी पुष्टि कर लेनी चाहिए।

<u>अगुवाई की कुंजी = अधीन किया हृदय है</u> — हमारी इच्छा उसे देना।

रोजाना मसीह को सिंहांसन पर बैठाना चाहिए (यदि मैं यह जानता हूं कि मैं उसके रास्तों में नहीं चल रहा हूं, मेरा हृदय नम्र और हिचकोले खाने वाला होता है तो, ''हे परमेश्वर, मुझे तेरे रास्ते चाहिए, मैं पश्चाताप करता हूं, और अपने रास्तों से मुड़ जाता हूं)

कई बार परमेश्वर एक बडी छड़ी का प्रयोग कर हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता है पर अकसर वह हमें ''नही'' कहने की आज़ादी देता है (हमारी इच्छा की डराने वाली शक्ति)

हम अपने आप को गड़बड़ी में डाल सकते हैं और परमेश्वर की योजना को अपने लिए हताश और उलझित कर सकते हैं। हम अपने आप को आत्मिक रूप से बौना बनाए रख सकते हैं, जब तक हम उसकी नहीं सुनते, जब तक अपनी इच्छा उसके आधीन नहीं कर देते और उसकी अगुवाई का अनुसरण नहीं करते केवल यही वह रास्ता हैं जिसके द्वारा परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है।

(नीतिवचन 3:6.... वह तेरें लिए सीधा मार्ग निकालेगा)

– अगुवे उदाहरण : मूसा और हारून

''अपने अगुवों की मानों और उनके आधीन रहो क्योंकि वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वे काम आनन्द से करें ना कि ठन्डी सांस ले लेकर क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं''
– (इब्रानियों 13:17)

– परमेश्वर की सीधी आवाज़

सभी तरह की अगुवाई की कुंजी अधीन किया हृदय है

''उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा... अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ना होना'' – नीतिवचन 3: 6–7

एक मिशन

3. .....

– उसका मिश्न उनके जीवन का अभिप्राय बन गया।

– यीशु का मिश्नः

''सब देशों के लोगों को चेला बनाना''

''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो''

''तुम मेरे गवाह हो''

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया में और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे'' – प्रेरित 1:8

सुरक्षा

4. .....

– एकता ताकत उत्पन्न करती है! अनेकता कमजोरी लाती है!
– *जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है* – इफिसीयों 2:24

अहसास करना : बस इसलिए कि आप पैदा हुए हो, बढ़ोतरी स्वचालित नहीं होती आपको उन चीजो को खोजना पड़ेगा और परमेश्वर प्रदत इन बातों मे चलना होगा।

3. <u>मिशन</u> – उसका मिशन उनके जीवन का उद्धेश्य बन जाना था।

– परमेश्वर इस संसार में अपने लोगों के द्वारा अपने नाम, अपने प्रेम, अपनी योजना और उद्धेश्य के निमित अपने लोगों को एक गवाह के रूप में स्थापित करना चाहता था।

– आखिर में उसका पुत्र यीशु इस संसार में उनके द्वारा आएगा।

जब तक इस्राएल के पास यह मिशन एक लक्ष्य के रूप में था सब कुछ ठीक–ठाक रहा। परमेश्वर की आशिष हमेंशा उन पर बनी रही। परन्तु जैसे ही उन्होंने विद्रोह किया और अपनी इच्छाओं, ख्याति, योजनांए, गन्तव्यों के द्वारा परमेश्वर के मिशन को बदल दिया तब उनके रास्ते कठिन हो गए और परमेश्वर उन्हे अपने गवाह के रूप में इस्तेमाल न कर सका ।

यीशु के पास भी हमारे लिए एक मिशन था यह न केवल हमारी जरूरतों को पूरा करना था परन्तु उसके राज्य का आगमन था और उसकी इच्छा यहां हमारे जीवन में पूरी होना था। हमारा मिशन उसके नाम की गवाही को प्रकट करना है, हरेक जाति राष्ट्र में से चेलों को बनाना है, और मसीह की दुल्हन को पूरा करना है तब यीशु आएगा और परमेश्वर की योजना का अन्त इस धरती पर लाएगा।

इसलिए जिस तरह हम बढ़ते हैं और आशिष को पाते हैं उसके लिए हमें प्रतिदिन सुबह उठते ही इस बात को जान लेना है कि हम प्रभुओं के प्रभु और राजाओं के राजा के अधिकार में जीवन जी रहे हैं। हमें अपना जीवन प्रतिदिन उसकी योजनाओं और उद्धेश्यों को पूरा करने के लिए जीना चाहिए – उसे महिमा दने और आशिष देने के लिए जीना चाहिए।

हमारा मिशन उसकी ''गवाही'' देना है अर्थात हम क्या ''कहते'' हैं और क्या ''करते'' हैं – बस लोगों से इतना कहें कि यीशु ने आपके लिए क्या किया और क्या कर रहा है (''नए जीवन में बढ़िऐ'' पर्चे को देखें)

– अगुवे उदाहरण : मूसा और हारून

''अपने अगुवों की मानों और उनके आधीन रहो क्योंकि वे उनकी नांई तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वे काम आनन्द से करें ना कि ठन्डी सांस ले लेकर क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं''
– (इब्रानियों 13:17)

– परमेश्वर की सीधी आवाज़

सभी तरह की अगुवाई की कुंजी अधीन किया हृदय है

''उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा... अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ना होना'' – नीतिवचन 3: 6–7

एक मिशन

3. .....

– उसका मिश्न उनके जीवन का अभिप्राय बन गया।

– यीशु का मिश्नः

''सब देशों के लोगों को चेला बनाना''

''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो''

''तुम मेरे गवाह हो''

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया में और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे'' – प्रेरित 1:8

सुरक्षा

4. .....

– एकता ताकत उत्पन्न करती है! अनेकता कमजोरी लाती है!
– *जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है* – इफिसीयों 2:24

अहसास करना : बस इसलिए कि आप पैदा हुए हो, बढ़ोतरी स्वचालित नहीं होती आपको उन चीजो को खोजना पड़ेगा और परमेश्वर प्रदत इन बातों मे चलना होगा।

4. <u>सुरक्षा</u>

पोषण, अगुवाई, परमेश्वर की ओर से एक मिशन और अब उसकी सुरक्षा — मसीह जीवन की बढ़ोतरी के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध के आवश्यक हिस्से है।

इस्राएल को वास्तव में परमेश्वर की सुरक्षा की जरूरत थी — वे लोग हुनरमदं, कुशल नहीं थे, रेगिस्तान के बीच में से, दुशमनी भरे वातावरएण में से निकलते हुए, चारों तरफ दुश्मनों से घिरे हुए थे।

उनकी एकता — उनकी ताकत थी। जब तक वे परमेश्वर के सामने चलते रहे और एक बड़ी भीड़ के रूप में उसकी आज्ञा का पालन करते रहे — कोई उन्हें छू भी न सका। परमेश्वर ने उनके दुश्मनों के दिलों में उनके प्रति डर को पैदा कर दिया

परन्तु दुख भरा सत्य यह है कि उनमें एकता टुट गई। वे कुड़कुड़ाने, शिकायत करने लगें और विद्राही हो गए। जब वे अपने दिलों में, और दिमाग में और उस उद्धेश्य में एकता में नहीं थे वे दुश्मन के शिकार बन गए (एक बड़ी भीड़ दुश्मन की सेनाओं और विपत्तीयों के द्वारा नाश कर दी गई) परमेश्वर की सुरक्षा उन पर से उठा ली गई।

यीशु का उद्धेश्य और हमारे लिए उसकी प्रार्थना यही हैं कि हम एक हो जांए और एकता में चलें (यहुन्ना 17)। परमेश्वर ने इस घरती पर बस एक ही देह को रखा है, जब वह एक साथ चलती है, एक साथ बढ़ोतरी भी करती, विजय हासिल करती और उसकी महिमा कंरती है। परमेंश्वर उसकी देह को जब वह एकता, आज्ञाकरिता, ''पूर्ण प्रेम'' के ढ़ांचे में इक्टठी रहने की इच्छा में रहती हैं तो अपनी सुंरक्षा देने के द्वारा उत्तर देता है। देखें इफिसीयों 2:2

जब हम वास्तव में एकता मे चलना आरम्भ करते हैं — इक्ट्ठे होकर — अपनी चाहतों और इच्छाओं को एक तरफ रखकर — एक दूसरे को प्रथम स्थान देते हुए और आदर करते हुए — ऐसा करते हैं जैसा यीशु ने प्रार्थना की कि वह वास्तव में होने जा रहा है — <u>तब</u> हम शक्तिशाली होते हैं, बढ़ोतरी जीवन में शुरू होती है, दुश्मन अब हममें रूकावट पैदा नहीं कर सकता और परमेश्वर का उद्धेश्य हमारे सामने लाया जाता है।

यह उत्साहजनक है जब हम नए नियम की कलिसीया के आरम्भिक दिनों को देखते हैं — कैसे परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर का चलन उनके लिए इस बात की कुंजी था कि उन लोगों को एक दूसरे की जरूरत थी, वे एक दूसरे से सम्बन्धित थे, और उन्होनें एक दूसरे को निस्वार्थ अपने आपको दिया। केवल इसी तरह के वातावरण में वास्तविक बढ़ोतरी हो सकती हैं।

(इस पाठ का पहला हिस्सा परमेश्वर की योजना और उसके लोगों के लिए उसके प्रबन्ध पर ''सरसरी नजर'' डालना है जिसके बारे में मसीह में सम्पूर्ण सामग्री के अगले हिस्सों में व्याख्या की जाएगी। पर आओं अब हम प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के नीचे दिए गए ''पहचानना'' को पढ़ें.....)

– अगुवे उदाहरण : मूसा और हारून

''अपने अगुवों की मानों और उनके आधीन रहो क्योंकि वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वे काम आनन्द से करें ना कि ठन्डी सांस ले लेकर क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं''
– (इब्रानियों 13:17)

– परमेश्वर की सीधी आवाज़

सभी तरह की अगुवाई की कुंजी अधीन किया हृदय है

''उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा... अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ना होना'' – नीतिवचन 3: 6–7

3. **एक मिशन** .....

– उसका मिश्न उनके जीवन का अभिप्राय बन गया।

– यीशु का मिश्नः

''सब देशों के लोगों को चेला बनाना''

''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो''

''तुम मेरे गवाह हो''

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया में और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे'' – प्रेरित 1:8

4. **सुरक्षा** .....

– एकता ताकत उत्पन्न करती है! अनेकता कमजोरी लाती है!
– *जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है* – इफिसीयों 2:24

अहसास करना : बस इसलिए कि आप पैदा हुए हो, बढ़ोतरी स्वचालित नहीं होती आपको उन चीजो को खोजना पड़ेगा और परमेश्वर प्रदत इन बातों मे चलना होगा।

पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा

. हमने परमेश्वर के उन अद्‌भुत प्रबन्धों के बारें में जो उसने हमें दिए हैं बातचीत की है — नया जन्म, उसका वचन, प्रार्थना, उसके साथ संगति आदि अब यहां पर एक और प्रबन्ध जिसके बारे में हमें बातचीत करनी चाहिए... यह पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा है। यह यीशु का उसके अनुयायीयों के लिए जन्म दिन को विशेष उपहार है।

अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका के उस संदर्भ को पढ़ें जो इस वाक्य से आरम्भ हेाता है, ''यीशु जानता था कि उसके पीछे चलने वाले.....''

यीशु जानता था कि हम अपने आपसे उसके कार्य और उसकी इच्छा को पूरा नहीं कर सकते हैं यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे ''बाट जोहें और उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की इन्तजार करें जो उसने दी थी पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा।''

- यहून्ना बपतिस्मा देने वाले ने लूका 3:16 यीशू की ओर इशारा किया कि वे उन्हे पवित्रआत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा

यीशु जानता था कि उसके पीछे चलने वालो को इस पृथ्वी पर अपने ही साधनों पर छोड़ दिया गया है, यहां तक कि उन्नति के लिए दिए गए प्रबन्ध जिन्हें हमनें देखा उस यात्रा के लिए पूरे नहीं होगे जो उनकी उपयोगिता और परिपक्वता के लिए उनके सामने रखे गए हैं। उन्हें कई अवसरो को गले लगाना होगा और कई रूकावटों को जितना होगा जिनका सामना यीशु ने स्वंय भी किया। इसलिए उसकी योजना ये थी कि आत्मिक सामर्थ का एक स्त्रोत प्रदान करे जो सभी समयों के लिए पर्याप्त हो, इसे उसने ''पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मे'' का शीर्षक दिया।

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले ने भविष्यवाणी की :

''तो यहून्ना ने उन सबसे कहा,''मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है, मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूं, वह तुम्हे पवित्रआत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'—लूका 3:16

यीशु ने अपने चेलों को बताया :

''और उनसे मिलकर उन्हे आज्ञा दी, ''यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो। क्योंकि यहून्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनो के बाद तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'' —प्रेरित 1:4—5

तीन कड़ियां जिनसे यीशु हमें अपने साथ बांधता है

''... तब सुनने वालो के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे,'' हे भाईयो, हम क्या करें ? पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने – अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे, क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों और सब दूर – दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारे परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।' – प्रेरित 2:37—39

1. **पश्चाताप** .....
2. **पानी का बपतिस्मा** .....
3. **पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा** .....

ये तीन कड़ियां सिद्ध एकता को बनाती और एक विश्वासी का मसीह के साथ सम्बन्ध उस समय तक पूरा नहीं हो जाता है, जब तक कि ये तीनों व्यक्तिगत अनुभव में न आ जांए।

यहां पर तीन कड़ियां हैं जिनके द्वारा यीशु हमें बांधता है। ये महत्वपूर्ण है कि हम इन तीन कड़यों को समझ लें।

पढ़िए प्रेरित 2:37—39

''..... तब सुनने वालो के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, ''हे भाईयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने — अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे, क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारे संतानों और सब दूर — दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारे परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।''

ये तीन कड़ियां **पश्चातापी विश्वास, पानी का बपतिस्मा और पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा** है।

- पतरस नें कहा तुम दान पाओंगे। कौन सा दान? जो कुछ उन्होंने चेलों मे प्रदर्शित होते हुए देखा था।

  परमेश्वर की वहीं सामर्थशाली उपस्थिति, वह यही दान है जिसे वह आपको देगा।

- यें तीन कडियां सिद्ध एकता में है एक विश्वासी का मसीह के साथ सम्बन्ध तब तक पूरा नहीं होता जब तक ये तीनों कड़ियां व्यक्तिगत रूप मे अनुभव नहीं की जाती।

पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा

यीशु जानता था कि उसके पीछे चलने वालो को इस पृथ्वी पर अपने ही साधनों पर छोड़ दिया गया है, यहां तक कि उन्नति के लिए दिए गए प्रबन्ध जिन्हें हमनें देखा उस यात्रा के लिए पूरे नहीं होगे जो उनकी उपयोगिता और परिपक्वता के लिए उनके सामने रखे गए हैं। उन्हें कई अवसरो को गले लगाना होगा और कई रूकावटों को जितना होगा जिनका सामना यीशु ने स्वंय भी किया। इसलिए उसकी योजना ये थी कि आत्मिक सामर्थ का एक स्त्रोत प्रदान करे जो सभी समयों के लिए पर्याप्त हो, इसे उसने ''पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मे'' का शीर्षक दिया।

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले ने भविष्यवाणी की :

> *''तो यहून्ना ने उन सबसे कहा,''मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है, मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूं, वह तुम्हे पवित्रआत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'*—लूका 3:16

यीशु ने अपने चेलों को बताया :

> *''और उनसे मिलकर उन्हे आज्ञा दी, ''यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो। क्योंकि यहून्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनो के बाद तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे।''* —प्रेरित 1:4—5

तीन कड़ियां जिनसे यीशु हमें अपने साथ बांधता है

''... तब सुनने वालो के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे,'' हे भाईयो, हम क्या करें ? पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने – अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे, क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों और सब दूर – दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारे परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।' – प्रेरित 2:37—39

1. **पश्चाताप** .....
2. **पानी का बपतिस्मा** .....
3. **पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा** .....

ये तीन कड़ियां सिद्ध एकता को बनाती और एक विश्वासी का मसीह के साथ सम्बन्ध उस समय तक पूरा नहीं हो जाता है, जब तक कि ये तीनों व्यक्तिगत अनुभव में न आ जांए।

नए नियम से तीन उदाहरण :

- प्रेरितो के काम 8:14—17, **पतरस और यहुन्ना सामरिया में,** प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने परमेश्वर के वचन को मान लिया है और बपतिसमा ले लिया है वह ये भी जानते थे कि पवित्रात्मा की शक्तिशाली उपस्थिति के बिना यीशु के पीछे चलना कितनी असम्भव सी बात है। इसलिए प्रेरितो ने सामरियो के लिए प्रार्थना की कि वे भी पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा पाएं।
- **पतरस और कुरनेलियुस 10** साल के बाद, पतरस को यीशु का दर्शन हुआ जो उसे अविश्वासीयों के एक समूह के पास जाने का निर्देश दे रहा था। प्रेरित 11:15—17 जैसे ही अविश्वासीयों से बातचीत की पवित्रआत्मा उन पर आ उतरा ठीक वैसे ही जैसे पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम के विश्वासीयों पर उतरा था। उनके पास पश्चातापी विश्वास था और अब वे पवित्रआत्मा में बपतिस्मा पाए थे, प्रेरितों ने पानी के बपतिस्मा का अनुभव इसके साथ जोड़ दिया।
- हमारी तीसरी कहानी प्रेरित 19:1—6 में हैं जहां हम **पौलुस को इफिसुस में 20 साल** के बाद पातें हैं उन भुखे लोगों के पास पश्चातापी विश्वास था और इन्होंनें यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था, परन्तु पौलुस उनकी इस बात से संतुष्ट नहीं था, उसने उन पर पवित्रआत्मा की प्राप्ति के लिए हाथ रख दिए।

इसलिए हम फिर से तीन कड़ियों की महत्वपूर्णता को देखते हैं — पश्चाताप, पानी का बपतिस्मा और पवित्रआत्मा में बपतिस्मा। पवित्रआत्मा में बपतिस्मा विश्वासीयों के लिए परमेश्वर की योजना है जिस तरतीब में इसका अनुभव किया जाता है उसमें भिन्नता है परन्तु हरेक घटना में प्रेरित संतुष्ट नहीं थे जब तक ये तीनों कड़ियां पूरी नहीं हो जाती।

- जैसे पवित्रशास्त्र में उदाहरण हैं हममें से कई तीनों कड़ियो का विभिन्न हालातों मे, यहां तक कि विभिन्न तरतीब में अनुभव करते हैं।
    - पास्टर अर्ल ने पश्चातापी विश्वास का अनुभव किया और एक बालक के रूप में पानी का बपतिस्मा लिया, पर सेमिनरी से 10 साल के बाद उसको पवित्रआत्मा में बपतिस्मा हुआ।
    - डॉन टोपे ने 21 साल की आयु में पश्चाताप किया इसके तुरन्त बाद उनका पवित्रात्मा में बपतिस्मा हुआ और वे भर गए थे! इसके 6 महीने के बाद उन्होंने पानी का बपतिस्मा लिया।

आज परमेश्वर तैयार है और विश्वासीयो को पवित्रआत्मा में बपतिस्मा देने की इच्छा रखता है।

इसके लिए दो तरह की शर्तें हैं।

- सबसे पहले दृढ़ निश्चय होना कि यीशु हमें बपतिस्मा देने जा रहा हैं इससे पहले कि हम मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करें हमें यह समझना चाहिए कि हमें उद्धारकर्ता की जरूरत है और वह हमें तत्परता से बचाना चाहता है। तब हम प्रार्थना करते हैं और प्राप्त करते हैं। बिल्कुल ऐसा ही पवित्रआत्मा के बपतिस्में में भी होता है।
- इसलिए दूसरी शर्त यह है कि इसके लिए इच्छा होनी चाहिए और पवित्रआत्मा के बपतिस्में को पाने के लिए हमारी अपनी ओर से तीव्रता होनी चाहिए।

पवित्रआत्मा की सामर्थ कुछ ऐसी हैं जिसे हम विश्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं। यह एक स्वचालित अनुभव नहीं है। जैसे उसने पहली सदी के विश्वासीयों मे वास किया वैसे ही वह हमें भरेगा और जो कोई उसे प्राप्त करते हैं उसमें से बह निकलेगा।

इसलिए आओं हमें तैयार हो जाए और इसकी इच्छा करें, प्रबन्ध कर दिया गया है! पवित्रआत्मा के बपतिस्में को पाने मे ऐसी कौन सी चीज़ हमें रोक रही है।

प्रेरित 8:14—17 **पतरस और यहुन्ना सामरिया में,**

''जब प्रेरितो ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरिया ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यहून्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्रआत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होनें पवित्रआत्मा पाया''।

प्रेरित 11:15—17 ; 10:45—47 **पतरस और कुरनेलियुस 10** साल बाद

''और ज्यों ही मैंने बोलना आरम्भ किया त्योंही पवित्रआत्मा उन पर उसी रीति सो उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था, तब प्रभु का वचन मुझे स्मरण आया जो वो कहा करता था, ''यहून्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्म पाओगे,'' अतः यदि परमेश्वर ने उन्हे भी वरदान दिया जो हमें प्रभु यीशु पर विश्वास करने से प्राप्त हुआ था तो मैं कौन था कि परमेश्वर को रोक सकता ?.... और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे वे सब विस्मित हुए कि पवित्रआत्मा का दान गैर यहूदियों पर भी उन्ड़ेला गया है क्योंकि वे उन्हे भिन्न–2 भाषांए बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए सुन रहे थे, तब पतरस ने कहा, क्या कोइ जल को रोक सकता है कि ये लोग जिन्होंने हमारे समान ही पवित्रआत्मा पाया है, बपतिस्मा ना पांयें ?''

प्रेरित 19:1—6 **पौलुस को इफिसुस में 20** साल बाद

''जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलूस उपर के सारे देश में होकर इफिसुस में आया और वहां पर कुछ चेलों को दखकर, उनसे कहा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्रआत्मा पाया ?'' उन्होंने उससे कहा,'' हमने तो पवित्रआत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।'' उसने उनसे कहा,'' तो फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया ?'' उन्होंनें कहा,'' यहून्ना का बपतिस्मा।'' पौलुस नें कहा,'' यहून्ना ने यह कहकर बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना।'' यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे, तो वे भिन्न–भिन्न भाषा बोलने लगे और भविष्यवाणी करने लगे।''

आत्मा के साथ बपतिस्मा परमेश्वर की योजना में सब विश्वासीयों के लिए है

इसकी दो आगामी आवश्यकतांए हैं :

1. दृढ़ विश्वास कि हमारा प्रभु यीशु विश्वासी को पवित्रआत्मा का बपतिस्मा देने को तैयार है।

2. उसके पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा पाने की तैयारी और इच्छा।

इसलिए इसे हम कैसे प्राप्त करें?

. पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा जन्म दिन के उपहार के समान है। इसे अच्छी तरह ढका हुआ है और हमारे लिए प्रबन्ध किया गया है। हम इस उपहार के साथ जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं। इसे खोलकर इसके साथ आनन्दित हो सकते हैं और इसे बिना खोले वहां पड़ रहने दे सकते हैं। पवित्रआत्मा का दान सभी विश्वासीयों को उनके नए जन्म के दिन दिया जाता है। पवित्रआत्मा लगातार हमारे दिमाग की मेज के उपर एक विचार के रूप में उपहार के जैसा पड़ा रह सकता है या फिर एक खुले हुए उपहार के रूप में अपनी सामर्थ को हमारे जीवन में छोड़ सकता है।

कैसे हम पवित्रआत्मा की पूरी सामर्थ को प्राप्त कर सकते हैं?

यहां पर कुछ ऐसे कदम हैं जिन्हें हम ले सकते हैं।

1. पहले यह निश्चित करें कि आपका **नया जन्म** हो गया है।

2. दूसरा यह निश्चित करें कि **कोई ऐसा न अंगीकार किया हुआ पाप** हमारे जीवन में तो नहीं जिसका हम सामना नहीं करना चाहते और जिसे हम जीवन से नहीं हटाना चाहते।

3. तीसरा **शैतान का कोई आमंत्रण** न हो। कोई भी ऐसा द्वार खुला नहीं होना चाहिए जिसके द्वारा शत्रु प्रवेश पा सके। ऐसा कुछ भी न हो जिसे हमने न छोड़ दिया हो और जिससे हम मुड़ न गए हों। प्रशिक्षण पुस्तिका के संदर्भ को पढ़िए ''यदि आप किसी तरह से... शामिल हैं''

    - यदि हम ज्योतिषशास्त्र, भविष्यवाणीयां, आत्माओं के संसार से सम्बन्ध रखना, राशिफल देखना, मुर्तिपूजा, भावातीत ध्यान, आधुनिक शिक्षांए (न्यु ऐज) या भूतसिद्धि, आदि जैसे कार्यो में संलग्न हैं तो इन सब को छोड़ना जरूरी है। ये सब परमेश्वर की ओर से नहीं हैं। परमेश्वर को जानने दें कि हम केवल पवित्र आत्मा के आलौकिक काम मे रूची रखते हैं।

    - पुराने नियम में... परमेश्वर ने उपरोक्त भ्रान्त शिक्षाओ ंके लिए मृत्यदण्ड ठहराया था। वो शैतान नियंत्रित इन कामो के प्रति अपने लोगों के लिए अत्यंत गम्भीर था यदि वे उसमे संलग्न होते थें।

    - पवित्रआत्मा को छोड़कर किसी भी आत्मिक काम में शामिल होने की बात को जल्दी से जल्दी छोड़ दिया जाना चहिए। यीशु के लहू की सुरक्षा का दावा करें। और इन पापपूर्ण क्रियाओं को छोड़ने के लिए अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में दी गई प्रार्थना का प्रयोग करें।

पवित्रआत्मा का बपतिस्मा जन्मदिन के उपहार की तरह है जो हमारे घर लाया गया है, सब लिपटा हुआ हमारी मेज पर रखा हुआ है लैरी क्रिश्चियनशन अपनी पुस्तक ''भाषाओं का बोलना'' में दावा करते है कि हम अपने उपहारों से जैसा चाहते हैं वैसा व्यवहार कर सकते हैं। हम सावधानी से उसे खोल सकते हैं, उसका आनन्द ले सकते हैं और प्रयोग कर सकते हैं या फिर बिना प्रशंसा किए, बिना खोले वैसे ही इसे पडे रहने दे सकते हैं। पवित्रआत्मा सभी विश्वासीयों को उनके नए जन्म दिन ही से दिया गया है। वह हमारे आत्मिक घर में एक पैकेट की तरह एक मेज पर बैठा रह सकता है या फिर वह ताकत बन जाता है जो जैसे ही हम उपहार खोल देते जो मसीह ने हमें दिया है और उसे अपने आप को अपने जीवनों और अपनी कलिसीयाओं के द्वारा वर्णन करने देता है ।

पवित्रआत्मा के द्वारा बपतिस्मा कैसे प्राप्त करें

1. निश्चय कीजिए कि आपका **नया जन्म** .....हो गया है.
2. निश्चय कीजिए **न अंगीकार किया हुआ पाप** .....न हो जिसे छोड़ न दिया गया हो
3. निश्चय कीजिए **शैतान का कोई आमंत्रण** .....न हो जिसे बन्द न कर दिया गया हो

यदि आप किसी तरह से किसी झुठी शिक्षा में शामिल हैं, किसी भी प्रकार के ''झुठे'' या ''आत्मिकं'' अभ्यास या विश्वास में शामिल हैं तो यीशु के नाम में उसको छोड़ दें, जितना भी सम्भव हो सके। परमेश्वर से कहें कि वह आपको क्षमा करे। गलत शिक्षा की आत्मा को बांधे और निकाल दें। यीशु के लहु में सुरक्षा का दावा करें और पवित्रआत्मा से हर एक क्षेत्र को भरने के लिए कहें जहां कहीं गलत विश्वास हो।

यहां आपके लिए प्रार्थना दी गई है जिसका आप प्रयोग कर सकते हैं:

''प्रिय पिता, यदि मैंने विश्वास किया, अध्ययन किया या कोई भी ऐसा काम किया जिससे आप अप्रसन्न हों या आपके वचन के विरूद्ध हो, मैं सच्चाई से क्षमा मांगता हूं। मैं आपको क्षमा करने को कहता हूं क्योंकि इन बातों में संलग्न हूं और मैं वायदा करता हूं कि अब उनके साथ कुछ वास्ता नहीं रखूंगा। यदि कोई किताब या कुछ वस्तुएं जो उनसे सम्बन्धित हैं तो मैं वायदा करता हूं कि अभी उन्हें जला दूंगा।''

मैं उनको (झुठे शिक्षा – उनका नाम) यीशु मसीह के नाम से छोड़ता हूं उनकी (उनका नाम) आत्मा, मैं यीशु के लहू में बांधता हूं और तुम्हे अन्धकार में डालता हूं कि फिर कभी वापस न आए, यीशु के नाम में ! धन्यवाद यीशु।

दूसरा पैरा झुठी शिक्षा या सम्प्रदाय के नामो को लेते हुए लिए पुनः दोहराएं – जिनके साथ आप शामिल हैं

4. चौथा कदम **<u>विश्वास से मांगना</u>** है।

- याकूब ने कहा, ''तुम्हारे पास नहीं हैं क्योंकि तम मांगतें नहीं हो।''

- लुका 11:10—13 ऐसे कहता है कि ''जो कोई मांगता है उसे मिलता है, जो कोई ढुंढता है वह पाता है; जो कोई खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा... तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हे जो पवित्रआत्मा मांगते हो क्यों न देगा।'' हमारे लिए जरूरी है कि हम विश्वास से मांगें कि पिता हमें अपने पवित्रआत्मा से भरे।

- हमने पहले यह सीखा कि ''विश्वास ही वह हाथ है जो परमेंश्वर की प्रतिज्ञाओं को पाने के लिए बढ़ता है और प्राप्त करता है। ''बाइबल कहती है कि, ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ...'' विश्वास के द्वारा हम पहुंचते हैं और परमेश्वर के उद्धार के दान को प्राप्त करते है। इसी तरह हम विश्वास के द्वारा उन दूसरे दानों को जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किए हैं प्राप्त करते हैं जिनमें पवित्रआत्मा का बपतिस्मा भी है।

5 पांचवां कदम **<u>विश्वास में स्तुति करना</u>**।

- ''प्रभु मैं विश्वास करता हूं, मैं तेरे वचन को ले लेता हूं।''

- इसका कोई अर्थ नहीं कि हम कैसा महसुस करते हैं, इस प्रतिज्ञा का विषय विश्वास है इसलिए हम परमेश्वर को उसके भले दान के लिए धन्यवाद देते हैं।

- इन तीन उदाहरणों को जिन्हें हम प्रेरितों के काम में पढ़ते हैं, उनमें विश्वासीयों ने एक नई भाषा को बोलना शुरू किया जैसा चेलों ने पिन्तेकुस्त के दिन अनुभव किया था पवित्रआत्मा अकसर अपनी उपस्थिति का प्रगटीकरण नई आत्मिक भाषा बोलने में मदद करने के द्वारा करता है।

- अन्य भाषा वो कठिन बात है जिसके लिए हमें परमेश्वर को नियंत्रण करने देना चाहिए। हमारे पुराने जीवन में हमारा पापपूर्ण स्वभाव अकसर हमारी भाषा के द्वारा व्यक्त होता था। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं कि पवित्रआत्मा हमारे नए जीवन को हमारी भाषा के द्वारा व्यक्त करे। यदि परमेश्वर हमारे बोलने के केन्द्र को नियंत्रित कर सकता है तो उसके पास में वास्तव में एक ऐसा स्थान है जिसके माध्यम से वह सभी दूसरे क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण रख सकता है।

4. **विश्वास से मांगना**

''यदि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को भली वस्तुंए देना जानते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हे जो पवित्रआत्मा मांगते हो क्यों न देगा — लूका 11:13

5. **विश्वास में स्तुति करना.**

विश्वास में कदम बाहर निकालना — मत्ती 14:28—29

''पतरस ने उसे उत्तर दिया और कहा, ''प्रभु यदि तू है तो मुझे आज्ञा दे कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आंऊ, '' उसने कहा, ''आ'' तब पतरस नाव पर से यीशु की ओर पानी पर चला।

उनसे विनय करें जिन्होंने पवित्रआत्मा का बपतिस्मा लिया हो कि वे आपके साथ प्रार्थना करें जिससे आप भी पवित्रआत्मा प्राप्त करें (प्रेरित 8:17)। या केवल यह एक प्रार्थना आप स्वंय भी यीशु से कर सकते हैं कि आपको पवित्रआत्मा से भरे। प्रार्थना करने के बाद विश्वास करें और विश्वासनुसार काम करें।

''प्रभु यीशु, मैं अपने पूरे हृदय से विश्वास करता हूं कि पवित्रआत्मा की भरपूरी मेरे लिए दी गई है जैसा मैं तुझ पर अनन्त उद्धार के लिए विश्वास करता हूं। वैसे ही मैं अब तुझ पर पवित्रआत्मा में भरने के लिए भरोसा रखता हूं। प्रभु यीशु मैं अपना जीवन तेरे आधीन करता हूं। मेरा बपतिस्मा देने वाला हो। अभी मुझे पवित्रआत्मा से बपतिस्मा दे। प्रभु यीशु धन्यवाद, आमीन''।

इसलिए हमें विश्वास का कदम उठाने की जरूरत है

- मती 14:28—29 में हम पाते है कि पतरस उस समय नाव में था जब तुफान आया। यीशु ने पतरस से बस इतना ही कहा, ''आ'' पतरस को अपने आप नाव में से उतरना था और यीशु की ओर कदम बढ़ाना था।

- वो ऐसा ही हमसें भी करने के लिए कह रहा है... नाव में से उतरें और यीशु की ओर कदम बढ़ाएं हरेक जो पवित्रआत्मा की सामर्थ को प्राप्त करने की इच्छा रखता है उसे विश्वास से कदम बढ़ाना होगा और यीशु से कहना हेागा कि उसका बपतिस्मा करे।

- उसके आधीन हो जाए उससे कहें कि वह आपको पूर्णता से भर दे। अपने जीवन को प्रभु के सामने प्रस्तुत करें और विश्वास करें कि वह आपको बपतिस्मा देगा।

प्रशिक्षण पुस्तिका में एक प्रार्थना दी गई है। विश्वास में कदम बढ़ाने के लिए इस प्रार्थना का प्रयोग किया जा सकता है या फिर दूसरे से कहें कि वह आपके साथ और आपके लिए प्रार्थना करें।

आओ हम प्रार्थना करें।

4. **विश्वास से मांगना**

''यदि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को भली वस्तुंए देना जानते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हे जो पवित्रआत्मा मांगते हो क्यों न देगा – लूका 11:13

5. **विश्वास में स्तुति करना.**

विश्वास में कदम बाहर निकालना – मत्ती 14:28–29

''पतरस ने उसे उत्तर दिया और कहा, ''प्रभु यदि तू है तो मुझे आज्ञा दे कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आंऊ, '' उसने कहा, ''आ'' तब पतरस नाव पर से यीशु की ओर पानी पर चला।

उनसे विनय करें जिन्होंने पवित्रआत्मा का बपतिस्मा लिया हो कि वे आपके साथ प्रार्थना करें जिससे आप भी पवित्रआत्मा प्राप्त करें (प्रेरित 8:17)। या केवल यह एक प्रार्थना आप स्वंय भी यीशु से कर सकते हैं कि आपको पवित्रआत्मा से भरे। प्रार्थना करने के बाद विश्वास करें और विश्वासनुसार काम करें।

''प्रभु यीशु, मैं अपने पूरे हृदय से विश्वास करता हूं कि पवित्रआत्मा की भरपूरी मेरे लिए दी गई है जैसा मैं तुझ पर अनन्त उद्धार के लिए विश्वास करता हूं। वैसे ही मैं अब तुझ पर पवित्रआत्मा में भरने के लिए भरोसा रखता हूं। प्रभु यीशु मैं अपना जीवन तेरे आधीन करता हूं। मेरा बपतिस्मा देने वाला हो। अभी मुझे पवित्रआत्मा से बपतिस्मा दे। प्रभु यीशु धन्यवाद, आमीन''।

1. आप मसीही बढ़ोतरी की आधारमय कूंजी किसे कहेंगे? (अपने उत्तर की पृष्ठभूमि के लिए ''नये जीवन में बढ़िऐ'' पर्चे का प्रयोग करें)

2. प्रेरित 10:44—48 को ध्यानपूर्वक पढ़े और पतरस की पुनः बताई हुई कहानी को भी जो कलिसीया के अगुवों को उसने कही प्रेरित 11:15—18 मे भी मिलती है।

   जब पतरस प्रचार कर ही रहा था तब क्या हुआ?

   यहुदी विश्वासीयों को किस चीज़ ने अचम्भित किया?

   जब ऐसा हुआ तब पतरस ने क्या स्मरण किया ?(प्रेरित 11516)

   पतरस ने क्यों उनको प्रभु यीशु के नाम मे बपतिस्मा लेने को कहा? (प्रेरित 10:47)

3. प्रेरित 8:14—24 ; प्रेरित 19:1—7 को ध्यानपूर्वक पढ़ें

   इन दोंनों जगहों में चेलों ने क्या पाया जो स्थानीय विश्वासीयों में नहीं था?

   पतरस और यहून्ना ने इसके लिए क्या किया?

   विश्वासीयों को सावधानी से शिक्षा देने के बाद, पौलुस ने कौन सी दो काम किए (प्रेरित 19:5—6)

   1.

   2.

   क्यों चेलों ने महसुस किया कि इन स्थानीय विश्वासीयों पर पवित्रआत्मा का उतरना जरूरी है? (आप लूका 24:49 के संदर्भ को और प्रेरित 1:8 को देख सकते हैं)

4. लूका 11:5—13 पढ़ें। यीशु पद 13 में कौन सी दृढ़ प्रतिज्ञा की बात करते हैं?

प्रथम

पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र ''पानी का बपतिस्मा'' को समूह के उत्तर के साथ देखें। हर एक सदस्य के पास प्रश्न पत्र हों। जब आप चर्चा समाप्त कर लें तो उन्हें ये प्रश्न पत्र वापस कर दें।

तब

थोड़ा समय अपने समूह के सदस्यों के साथ बितांए और ये निश्चय करें कि वे पवित्रआत्मा के बपतिस्में के बारे में समझ लें :

(1) यीशु मसीह में जीवन जीना प्रारम्भ करना क्यों जरूरी है?

(2) तीसरी कड़ी कौन सी है जिसे चेलों ने एक अनुभव में होना जरूरी समझा, जिसने प्रारम्भ मे विश्वासीयों को मसीह के साथ बांधकर रखा था और उन्हें उसकी प्रभुता में जीने दिया।

आगामी — चर्चा करें, प्रश्न पुछे आदि। आश्वस्त हों कि आपका समूह समझता हैः

(1) कि पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा, दूसरे आत्मिक वरदानों की तरह विश्वास के द्वारा ग्रहण किया गया (कमाया नहीं जाता, या हम उसके योग्य नही थे, या हमने इसे अपने प्रयासों से नही जीत सकते)।

(2) निर्देशक के वर्णन का नतीजा (1) पश्चाताप और विश्वास (2) पानी में बपतिस्मा (3) पवित्रआत्मा में बपतिस्मा, सब नए नियम के विश्वासीयों के लिए प्रारम्भिक कदम हैं। ये मसीह के जीवन का एक हिस्सा था।

(3) पवित्रआत्मा के बपतिस्में मे कौन से दिखाई देने वाले चिन्ह पूरे हुए जिनके बारे मे हमने प्रेरितों के काम में अध्ययन किया है।

अब यदि आत्मा निर्देशत करता है तो उनके लिए जो पवित्रआत्मा में बपतिस्मा लेना चाहते है, प्रार्थना करें। याद रखिए, सामर्थ पाने वाले अधिवेशन के पहले दो अध्याय पवित्रआत्मा से सामर्थ पाने के बारे में सिखांऐगे। इस प्रकार आगे भी इस विषय पर शिक्षा का अवसर मिलेगा ताकि कक्षा के अन्य सदस्य भी इस अनुभव को प्राप्त कर सकें।

अन्त में

1. ''मसीही में सम्पूर्ण जीवन'' के हिस्से पर विवाद करें जो अभी आने वाला है। सामर्थ पाने वाले अधिवेशनों मे हम आत्मा के उत्साहित कार्य के बारे में जांच करेगें जैसा स्वयं प्रभु यीशु और प्रारम्भिक विश्वासीयों के जीवन शैली में भी प्रकट किया गया है।

2. प्रश्न पत्र 6 पर ध्यान दें । अपने सभी सदस्य को उन्हें पूरा करने के लिए और दूसरे अधिवेशन की तैयारी के लिए उन्हें उत्साहित करें।